

# नटखट कन्हैया

दूसरा प्रेमी-(श्रद्धा से शीश झुकाकर) सच्चे बादशाह श्रीसद्गुरुदेव का मंगल मनाकर मैं ध्यान में बैठा देखा कि मैया के आँगन में बड़ी चहल-पहल है ब्रजेश्वरी श्रीयशोदा गोवत्स पूजा का उत्सव मना रही हैं । साँवरे सलोने मनमोहन ब्रजराजकुमार खिरक से बछड़े लाने के लिये आये । तत्काल ही मैं बछड़ा हो गया । श्यामसुन्दर पकड़कर घसीटते हुये मुझे मैया के पास ले आये । कृपानिधान श्रीस्वामीजी पूजन कराने के लिये श्रीगुरु रूप में पहले से ही विराजमान थे । मैं उछल-कूद रहा था । नटखट कन्हैया प्यारे भी कभी मेरी पीठपर हाथ फेरते, कभी मुझपर चढ़ने लगते थे । श्रीस्वामी बार-बार मना करते-‘बेटा ! पूजन के समय गोवत्स के ऊपर मत चढ़ो ।’ श्यामसुन्दर थोड़ी देर के लिये ठिठक जाते-फिर वही चंचलता । पूजन पूर्ण होने पर कन्हैया ने मैया से खिलौने मांगे, परन्तु श्रीगुरुदेव के सत्कार में संलग्न होने के कारण उन्होंने ध्यान न दिया । फिर तो क्या पूछना ! कन्हैया की बन आयी । मुझे पकड़कर आले के पास ले गये । और मुझपर चढ़कर खिलौने उतारने लगे । एक चंचल ग्वाले ने जो धीरे से मुझे साँटी लगायी मैं खिसक गया और प्यार कन्हैया आले में हाथ चिपटाकर व्याकुलता से ‘माँ, माँ, पुकारने लगे । मैया हक्की-बक्की होकर दौड़ी । सिर से वस्त्र उतर गया । वेणी से फूल झरने लगे । शीघ्रता से पहुँचकर लाड़ले

कन्हैया को गोद में ले लिया और बोली-‘ओ मेरे बाप ! क्या ऊधम मचा रक्खा है ? कही हाथ सरक जाता तो ! खिलौने के बिना छिनभर भी पेट का पानी नहीं पचता है ।’ प्यारे कन्हैया की आँखों में डर के कारण पहले से ही आँसू ढुलक रहे थे-और मैया की छाती से चिपक गये । मैं तो वह मधुर मूर्ति, भोली-भाली सूरत देखकर कुर्बान हो गया । ( सारा सत्संग समाज आनन्द में गद्गद् हो गया । )